चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक भास्कर
दिनांक 12.3.2019 पृष्ठ सं. 3 कॉलम 1-5

कार्यक्रम • कपास अनुसंधान केंद्रों सहित कपास से जुड़ी निजी कंपनियों के 150 वैज्ञानिक व प्रतिनिधि बैठक में पहुंचे, एक्सपर्ट ने रखे अपने विचार

'वर्षा कम होने से कपास पैदावार में आई कमी, जिसे हरियाणा-पंजाब करेंगे पूरा

भास्कर न्यूज | हिसार

देश में कपास की जरूरत को मुख्य रूप से केन्द्रीय व उत्तरी क्षेत्र के राज्य पूरा करते हैं। यहां के उत्पादन पर देश की टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज आश्रित हैं। एक्सपर्ट बताते हैं कि केंद्रीय भारत में बारिश कम होने से कपास के उत्पादन में कमी आई। मगर देश की इस जरूरत को हरियाणा और पंजाब के किसान कपास उत्पादन से पूरा कर सकते हैं।

तमाम परेशानियों के बावजूद इस बार दोनों ही राज्यों में अच्छी पैदावार हुई है। दरअसल, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के जेनेटिक्स एवं प्लांट ब्रीडिंग विभाग के कपास अनुभाग में कपास की ऑल इंडिया कोआर्डिनेटिड रिसर्च प्रोजेक्ट की उत्तर क्षेत्रीय वार्षिक समूह बैठक शुरू हुई। इसका शुभारंभ वाइस चांसलर प्रो. केपी सिंह ने किया।

इस परियोजना के संयोजक डॉ. एएच प्रकाश ने पिछले वर्ष विभिन्न केन्द्रों पर किए गए कपास अनुसंधानों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसमें उत्तरी भारत में कपास अनुसंधान केन्द्रों सहित कपास क्षेत्र से जुड़ी निजी कंपनियों से आए करीब 150 वैज्ञानिक व प्रतिनिधि हिस्सा ले रहे हैं। एग्रीकल्चर कालेज के डीन डॉ. केएस ग्रेवाल, पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. आईएस पंवार व डॉ. आरएस सांगवान सहित डीन, डायरेक्टर, अधिकारी एवं वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

एचएयू में कपास की ऑल इंडिया कोआर्डिनेटेड रिसर्च मीट में वैज्ञानिकों को कपास की चुनौतियां बताते कुलपति प्रो. केपी।

कपास पर आईसीएआर के एक्सपर्ट की राय : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सीआईसीआर के डायरेक्टर डॉ. वीएच वाघमरे बताते हैं कि भारत में कपास एक महत्वपूर्ण फसल है। टैक्सटाइल उद्योग को करीब 75 प्रतिशत कच्चे माल की आपूर्ति कपास से ही होती है। कपास से किसानों को अधिक लाभ दिलाने के लिए कृषि वैज्ञानिकों को कपास उत्पादन में किसानों की लागत कम करने और किसानों को इसकी अनुकूल किस्मों की खेती करने की सलाह देनी चाहिए। इसके साथ ही कपास की ब्रांडिंग और कांट्रेक्ट फार्मिंग के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। कपास उत्पादन में 50 प्रतिशत खर्च केवल लेबर पर होता है, वैज्ञानिकों को विशेषकर इस खर्च को घटाने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

वैज्ञानिकों को एमएनसी दे रही चुनौती

कृषि के क्षेत्र में अब वैज्ञानिकों और किसानों को मल्टीनेशनल कंपनी चुनौती दे रही हैं। प्रो. केपी सिंह बताते हैं कि फिनलैंड की एक कंपनी ने धान के पुआल और कपास की बछेंटी से भी रेशा तैयार करने में सफलता पाई है। इसलिए कृषि वैज्ञानिकों को लीक से हटकर सोचना होगा और मल्टीनेशनल कंपनियों की चुनौतियों का जवाब देने और किसानों के आर्थिक लाभ के लिए नई उन्नत प्रौद्योगिक विकसित करनी होंगी। पारंपरिक विधि से फसल की नई किस्म के विकास में तीन से 6 वर्ष लगते हैं जोकि बहुत लंबा समय है। इस समय अवधि को भी कम करने की जरूरत है। कपास एक नकदी फसल होने के कारण किसानों का इसकी तरफ विशेष आकर्षण है। यह शुष्क क्षेत्रों के लिए भी बहुत उपयुक्त फसल है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक जागरण

दिनांक 12.3.2017 पृष्ठ सं. 14 कॉलम 6-8

सफेद मक्खी का प्रकोप कम हुआ तो पंजाब हरियाणा में बढ़ा कपास उत्पादन : वाघमरे

जागरण संवाददाता हिसार : भारत में टेक्सटाइल उद्योग को करीब 75 प्रतिशत कच्चे माल की आपूर्ति कपास से ही होती इस बार केन्द्रीय भारत में वर्षा की कमी के चलते कपास के उत्पादन में गिरावट आई थी। यह बहुत संतोष की बात है कि उत्तरी भारत विशेषकर हरियाणा और पंजाब में उत्पादन और कपास के अंतर्गत क्षेत्र में वृद्धि हुई है।

यहां पिछले काफी वर्षों से सफेद मक्खी के प्रकोप के कारण किसान बेहद निराश थे। यह बात भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सीआइसीआर के डायरेक्टर डा. वीएच वाघमरे ने कही। वे सोमवार को चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में जैनेटिक्स एवं प्लांट ब्रीडिंग विभाग के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित कपास की ऑल इंडिया कोर्डिनेटिड रिसर्च प्रोजेक्ट की उत्तर क्षेत्रीय वार्षिक समूह बैठक में बतौर विशिष्ट अतिथि शिरकत कर रहे थे। इस दौरान विश्वविद्यालय के कुलपति बतौर मुख्य अतिथि मौजूद रहे। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों को कपास उत्पादन में किसानों की लागत कम करने और

वैज्ञानिकों को लकीर से हटकर सोचना होगा : कुलपति

कुलपति प्रो. केपी सिंह ने फिनलैंड की एक कंपनी का उल्लेख करते हुए कहा कि इस कंपनी ने धान के पुआल और कपास की बछेटी से भी रेशा तैयार करने में सफलता पाई है। इसलिए कृषि वैज्ञानिकों को लकीर से हट कर सोचना होगा और मल्टीनेशनल कंपनियों की चुनौतियों का जवाब देने और किसानों के आर्थिक लाभ के लिए नई उन्नत प्रौद्योगियां विकसित करनी होंगी। उन्होंने कहा कि पौध प्रजनन की पारम्परिक विधि से फसल की नई किस्म के विकास में तीन से छह वर्ष लगते हैं, जोकि बहुत लंबा समय है। इस समय अवधि को भी कम करने की जरूरत है। उन्होंने कहा उन्नत उत्पादन में गैर सरकारी और मल्टीनेशनल कंपनियां बहुत अच्छा कार्य कर रही हैं।

एचएयू में कपास की ऑल इंडिया कोर्डिनेटिड रिसर्च प्रोजेक्ट की उत्तर क्षेत्रीय वार्षिक समूह की बैठक में जुटे कृषि वैज्ञानिक

किसानों को इसकी अनुकूल किस्मों की खेती करने के अलावा कपास की ब्रांडिंग और कंट्रेक्ट फार्मिंग के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। कपास उत्पादन में 50 फीसद खर्च केवल लेबर पर होता है, वैज्ञानिकों को विशेषकर इस खर्च को घटाने पर ध्यान केंद्रित करना होगा।

परियोजना के संयोजक डा. एएच प्रकाश ने पिछले वर्ष विभिन्न केन्द्रों पर किए गए कपास अनुसंधानों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। इससे पूर्व विश्वविद्यालय के अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डा. नीरज कुमार ने मुख्य अतिथि एवं प्रतिभागी वैज्ञानिकों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में उत्तरी भारत में कपास अनुसंधान केन्द्रों सहित कपास क्षेत्र से जुड़ी निजी कंपनियों से आए करीब 150 वैज्ञानिक व प्रतिनिधि हिस्सा ले रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... पंजाब केसरी .....

दिनांक 12.3.2019 पृष्ठ सं. ..... 4 ..... कॉलम 1-6 .....

भविष्य की आवश्यकता को ध्यान में रखकर कार्य करें वैज्ञानिक : के.पी. सिंह

कपास की आल इंडिया को-आर्डिनेटिड रिसर्च प्रोजैक्ट की उत्तर क्षेत्रीय वार्षिक समूह बैठक शुरू

हिसार, 11 मार्च (ब्यूरो): चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के जैनेटिक्स एवं प्लांट ब्रीडिंग विभाग के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित कपास की आल इंडिया को-आर्डिनेटिड रिसर्च प्रोजैक्ट की उत्तर क्षेत्रीय वार्षिक समूह बैठक शुरू हुई। बैठक का उद्घाटन कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने किया।

कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने वैज्ञानिकों से भविष्य की आवश्यकता को ध्यान में रखकर कपास अनुसंधानों की रूपरेखा तैयार करने और उस पर यथाशीघ्र कार्य आरंभ करने का आह्वान किया। उन्होंने फिनलैंड की एक कम्पनी का उल्लेख करते हुए कहा कि इस कम्पनी ने धान के पुआल और कपास की बछेटी से भी रेशा तैयार करने में सफलता पाई है इसलिए कृषि वैज्ञानिकों को लकीर से हटकर सोचना होगा और मल्टीनैशनल कम्पनियों की चुनौतियों का जवाब देने और किसानों के आर्थिक लाभ के लिए नई उन्नत प्रौद्योगियां विकसित करनी होंगी। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अन्तर्गत सी.आई.सी.आर. के डायरैक्टर डा. वी.एच. वाघमरे जो कि इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे, ने कहा कि भारत में कपास एक महत्वपूर्ण फसल है। टैक्सटाइल उद्योग को करीब 75 प्रतिशत कच्चे माल की आपूर्ति कपास से ही होती है।

मंचासीन मुख्यातिथि प्रो. के.पी. सिंह एवं अन्य अधिकारी।

उन्होंने कहा कि इस बार केंद्रीय भारत में वर्षा की कमी के चलते कपास के उत्पादन में गिरावट की संभावना है परंतु यह बहुत संतोष की बात है कि उत्तरी भारत विशेषकर हरियाणा और पंजाब जहां पिछले काफी वर्षों से सफेद मक्खी के प्रकोप के कारण किसान बहुत निराश थे, में उत्पादन और कपास के अंतर्गत क्षेत्र में वृद्धि हुई है। उन्होंने कपास से किसानों को अधिक लाभ दिलाने के लिए कहा कि कृषि वैज्ञानिकों को कपास उत्पादन में किसानों की लागत कम करने और किसानों को इसकी अनुकूल किस्मों की खेती करने के अलावा कपास की ब्राडिंग और कंट्रैक्ट फार्मिंग के लिए प्रोत्साहित करने को कहा। उन्होंने कहा कपास उत्पादन में 50 प्रतिशत खर्च केवल लेबर पर होता है वैज्ञानिकों को विशेषकर इस खर्च को घटाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

एग्रीकल्चर कालेज के डीन डा. के.एस. ग्रेवाल ने बताया कि इस बैठक में कपास की काश्त को बढ़ावा देने, उत्पादन सुधार एवं संरक्षण से जुड़े विषयों पर चर्चा होगी। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डा. आई.एस. पंवार व कपास अनुभाग के अध्यक्ष डा. आर.एस. सांगवान सहित डीन, डायरैक्टर, अधिकारी एवं वैज्ञानिक उपस्थित थे।

कपास अनुसंधानों की रिपोर्ट प्रस्तुत की

उपरोक्त परियोजना के संयोजक डा. ए.एच. प्रकाश ने पिछले वर्ष विभिन्न केंद्रों पर किए गए कपास अनुसंधानों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। इससे पूर्व विश्वविद्यालय के अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डा. नीरज कुमार ने मुख्यातिथि एवं प्रतिभागी वैज्ञानिकों का स्वागत किया।

उन्होंने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में उत्तरी भारत में कपास अनुसंधान केंद्रों सहित कपास क्षेत्र से जुड़ी निजी कम्पनियों से आए करीब 150 वैज्ञानिक व प्रतिनिधि हिस्सा ले रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम .... हरि. भूमि ....

दिनांक 12.3.2019 पृष्ठ सं. 12 कॉलम 2-6

कपास फसल पर ऑल इंडिया कोर्डिनेटिड रिसर्च प्रोजेक्ट की बैठक

कुलपति बोले, कृषि वैज्ञानिकों को लीक से हटकर सोचना होगा

- वीसी बोले, फिनलैंड की कंपनी ने कपास की बंछटी से किया रेशा तैयार
- आर्थिक लाभ के लिए नई उन्नत प्रौद्योगिकिया विकसित करनी होंगी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हकृवि के जैनेटिक्स एवं प्लांट ब्रीडिंग विभाग के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित कपास की ऑल इंडिया कोर्डिनेटिड रिसर्च प्रोजेक्ट की उत्तर क्षेत्रीय वार्षिक समूह बैठक आज आरंभ हुई।

बैठक का उद्‌घाटन कुलपति प्रो. केपी सिंह ने किया। इस अवसर पर बोलते हुए कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा फिनलैंड की एक कंपनी ने धान के पुआल और कपास की बछेटी से भी रेशा तैयार करने में सफलता पाई है। इसलिए कृषि वैज्ञानिकों को लकीर से हट कर सोचना होगा और मल्टीनेशनल कंपनियों की चुनौतियों का जवाब देने और किसानों के आर्थिक लाभ के लिए नई उन्नत प्रौद्योगियां विकसित करनी होंगी।

दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते मुख्य अतिथि प्रो. केपी सिंह ।

उन्होंने कहा कि कपास शुष्क क्षेत्रों के लिए भी बहुत उपयुक्त फसल है। उन्होंने कहा कीट या प्राकृतिक आपदा के प्रकोप के कारण कपास उत्पादकों को भारी हानि उठानी पड़ती है। इसलिए कपास वैज्ञानिकों को विभिन्न अजैविक प्रभावों के प्रति सहिष्णु और उत्तम गुणवत्ता के साथ अधिक उत्पादन देने वाले किस्मों के विकास की दिशा में कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा उन्नत उत्पादन में गैर सरकारी और मल्टीनेशनल कंपनियां बहुत अच्छा कार्य कर रही हैं और पौध प्रजनन वैज्ञानिकों को चुनौती दे रही हैं।

टैक्सटाइल उद्योग को 75 फीसदी कच्चा माल देती है कपास

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक डॉ. वीएस वाघमरे ने कहा कि भारत में कपास एक महत्वपूर्ण फसल है। टैक्सटाइल उद्योग को करीब 75 प्रतिशत कच्चे माल की आपूर्ति कपास से ही होती है। उन्होंने कहा इस बार केन्द्रीय भारत में वर्षा की कमी के चलते कपास के उत्पादन में गिरावट की संभावना है। परन्तु यह बहुत संतोष की बात है कि उत्तरी भारत विशेषकर हरियाणा और पंजाब जहां पिछले काफी वर्षों से सफेद मक्खी के प्रकोप के कारण किसान बहुत निराश थे, में उत्पादन और कपास के अंतर्गत क्षेत्र में वृद्धि हुई है।

50 प्रतिशत खर्च लेबर पर

सहायक महानिदेशक डॉ. वीएस वाघमरे ने कहा कि कपास उत्पादन में 50 प्रतिशत खर्च केवल लेबर पर होता है, वैज्ञानिकों को विशेषकर इस खर्च को घटाने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। कृषि वैज्ञानिकों को कपास उत्पादन में किसानों की लागत कम करने और किसानों को इसकी अनुकूल किस्मों की खेती करने के अलावा कपास की ब्रांडिंग और कंट्रैक्ट फार्मिंग के लिए प्रोत्साहित करने को कहा।

उत्तरी भारत में बढ़ा कपास उत्पादन परियोजना के संयोजक डॉ. एएच प्रकाश ने पिछले वर्ष विभिन्न केन्द्रों पर किए गए कपास अनुसंधानों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कपास वैज्ञानिकों और गैर सरकारी एजेंसियों के सामुहिक प्रयासों से उत्तरी भारत में कपास उत्पादन और इसके अंतर्गत क्षेत्र में भारी वृद्धि हुई है। उन्होंने हकृवि द्वारा कपास उत्पादन प्रौद्योगिकी के विकास में अर्जित की गई उपलब्धियों की प्रशंसा की।

150 वैज्ञानिकों ने लिया भाग

हकृवि के अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. नीरज कुमार ने मुख्य अतिथि एवं प्रतिभागी वैज्ञानिकों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम में उत्तरी भारत में कपास अनुसंधान केन्द्रों सहित कपास क्षेत्र से जुड़ी निजी कंपनियों से आए करीब 150 वैज्ञानिक व प्रतिनिधि हिस्सा ले रहे हैं। इस अवसर पर एग्रीकल्चर कालेज के डीन डॉ. केएस ग्रेवाल, पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. आईएस पंवार व कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. आरएस सांगवान आदि उपस्थित थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक भास्कर, अमर उजाला
दिनांक 12.3.2019 पृष्ठ सं. 5, 3 कॉलम 6-7, 1-3

फसल अवशेष प्रबंधन पर आविष्कार थीम पर आज एचएयू में कृषि मेला

हिसार | खरीफ 2019 का कृषि मेला मंगलवार को एचएयू के बालसमंद रोड स्थित विवि रिसर्च फार्म में लगेगा। फसल अवशेष प्रबंधन पर होने वाले आविष्कार मेले की थीम रहेंगे। फसलों के अवशेष का प्रबंधन प्रदेश में एक बड़ी चुनौती है। लगातार जागरूकता के बावजूद किसानों को कोई ठोस समाधान नहीं मिल रहा।

इस मेले में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तरप्रदेश आदि राज्यों से हजारों किसान आते हैं। मेले में ऐसी कंपनियों को आमंत्रित किया है जिन्होंने फसल अवशेष के क्षेत्र में कोई आविष्कार किए हैं। इसके साथ ही विभिन्न विभागों द्वारा भी फसल अवशेष प्रबंधन विषय पर जानकारी दी जाएगी। कार्यक्रम का शुभारंभ कुलपति प्रो. केपी सिंह करेंगे। इसके साथ ही सीआईआरबी के डायरेक्टर डॉ. एसएस दहिया, एनआरसीई के डायरेक्टर डॉ. बीएन त्रिपाठी, लुवास के कुलपति डॉ. गुरदियाल सिंह उपस्थित रहेंगे।

244 स्टॉलों पर किसानों को मिलेगी जानकारी

मेला ग्राउंड में 244 स्टॉल लगाई जा रही हैं। इसमें एचएयू के विभिन्न डिपार्टमेंट, लुवास, सीआईआरबी, एचएयू, सेल्फ हेल्प ग्रुप, एनजीओ, प्रोग्रेसिव किसान शामिल रहेंगे। मेले में किसानों को कानूनी जागरूकता, एड्स कैंपेन आदि भी जानकारी भी मिल सकेगी। किसान मिट्टी व पानी की जांच भी करा सकते हैं।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कृषि मेला आज

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मंगलवार से कृषि मेला (खरीफ) का आयोजन होगा। कृषि मेले का विषय फसल अवशेष प्रबंधन होगा। इसमें किसानों को कृषि की उन्नत तकनीकों के साथ फसल अवशेषों के प्रबंधन के लिए जानकारी दी जाएगी। मेले में एग्रो-इंडस्ट्री प्रदर्शनी भी लगेगी। मेले को लेकर तैयारियां पूर कर ली गई है। इस मेले में किसानों से अपील की गई है कि वह ज्यादा से ज्यादा संख्या में यहां पहुंचे और कृषि की उन्नत किस्मों के बारे में जानकारी प्राप्त करें। मेले में किसानों को बताया जाएगा कि वर्तमान में अगर वह वैज्ञानिक तरीके से खेती करेंगे तो इससे न सिर्फ उनकी आमदनी बढ़ेगी बल्कि इससे कृषि की उन्नत किस्मों के बारे में वह जागरूक होंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम अमर उजाला, दैनिक भास्कर

दिनांक 12.3.2019 पृष्ठ सं. 6, 1 कॉलम 1-2, 7

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वानिकी विभाग में प्रोफेसर डॉ. बिमलेंद्र कुमारी को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह अवॉर्ड वानिकी के क्षेत्र में उनके योगदान और उपलब्धियों के लिए वीनस इंटरनेशनल फाउंडेशन की ओर से प्रदान किया गया है। उल्लेखनीय है कि यह संस्था देश-विदेश की महिलाओं को उनकी विशिष्ट उपलब्धियों के लिए प्रतिवर्ष मार्च में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सम्मानित करती है। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य कामकाजी महिलाओं की उपलब्धियों को ढूंढना एवं सेलिब्रेट करना है।

एचएयू के वानिकी विभाग की प्रोफसर डॉ. बिमलेन्द्र को लाइफ टाइम एचीवमेंट अवॉर्ड

हिसार | एचएयू के वानिकी विभाग में प्रोफेसर डॉ. बिमलेन्द्र कुमारी को लाइफ टाइम एचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। उन्हें यह अवॉर्ड वानिकी के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान और उपलब्धियों के लिए वीनस इंटरनेशनल फाउंडेशन ने प्रदान किया है। यहां उल्लेखनीय है कि उपरोक्त संस्था महिलाओं को उनकी विशिष्ट उपलब्धियों के लिए प्रतिवर्ष मार्च माह में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सम्मानित करती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ...दैनिक ट्रिब्यून, दैनिक जागरण...
दिनांक ...12.3.2019... पृष्ठ सं. ...4/16... कॉलम ...5-6, 1-2...

डॉ. बिमलेन्द्र को अचीवमेंट अवार्ड

हिसार में लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड प्राप्त करती प्रो. डॉ. बिमलेन्द्र कुमारी। -निस

हिसार(निस) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वानिकी विभाग में प्रो. डॉ. बिमलेन्द्र कुमारी को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह अवार्ड वानिकी के क्षेत्र में उनके योगदान और उपलब्धियों के लिए वीनस इंटरनेशनल फाउंडेशन द्वारा दिया गया। उल्लेखनीय है कि उपरोक्त संस्था देश-विदेश की महिलाओं को उनकी विशिष्ट उपलब्धियों के लिए प्रतिवर्ष मार्च माह में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सम्मानित करती है। इस अवार्ड की चयन प्रकिया अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों की समिति व बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट द्वारा निर्धारित विधि के अंतर्गत की जाती है।

एचएयू की प्रो. बिमलेंद्र को मिला लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

प्रोफेसर डा. बिमलेंद्र कुमारी अवार्ड प्राप्त करते हुए।

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वानिकी विभाग में प्रोफेसर डा. बिमलेन्द्र कुमारी को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह अवार्ड वानिकी के क्षेत्र में उनके योगदान और उपलब्धियों के लिए वीनस इंटरनेशनल फाउंडेशन की ओर से प्रदान किया गया है। उल्लेखनीय है कि उपरोक्त संस्था देश-विदेश की महिलाओं को उनकी विशिष्ट उपलब्धियों के लिए प्रतिवर्ष मार्च माह में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सम्मानित करती है। इस अवार्ड की चयन अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों की समिति व बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट द्वारा निर्धारित प्रक्रिया के तहत किया जाता है। (जास)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम वीर भूमि, पंजाब केसरी

दिनांक 12.3.2019 पृष्ठ सं. 11, 2 कॉलम 1, 8

खबर संक्षेप

डा. बिमलेंद्र को लाइफ टाइम एचीवमेंट अवॉर्ड

हिसार। हकृवि के वानिकी विभाग में प्रोफेसर डॉ. बिमलेंद्र कुमारी को लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया है। उन्हे यह अवार्ड वानिकी के क्षेत्र में उनके योगदान और उपलब्धियों के लिए वीनस इंटरनेशनल फाऊंडेशन की ओर से प्रदान किया गया है। यहां उल्लेखनीय है कि उपरोक्त संस्था देश-विदेश की महिलाओं को उनकी विशिष्ट उपलब्धियों के लिए प्रतिवर्ष मार्च माह में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सम्मानित करती है। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य कामकाजी महिलाओं की उपलब्धियों को ढूंढना एवं सेलिब्रेट करना है। इस अवार्ड की चयन प्रक्रिया अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों की समिति व बोर्ड ऑफ मैनेजमैंट द्वारा निर्धारित विधि के अंतर्गत की जाती है।

प्रो. डा. बिमलेंद्र कुमारी अवार्ड प्राप्त करते हुए।

डा. बिमलेंद्र को मिला लाइफ टाइम एचिवमैंट अवार्ड

हिसार, 11 मार्च (ब्यूरो): चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वानिकी विभाग में प्रो. डा. बिमलेंद्र कुमारी को लाइफ टाइम एचिवमैंट अवार्ड से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह अवार्ड वानिकी के क्षेत्र में उनके योगदान और उपलब्धियों के लिए वीनस इंटरनैशनल फाऊंडेशन की ओर से प्रदान किया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ....नभ. छोर........
दिनांक 12.3.2019 पृष्ठ सं. ...3...... कॉलम ...6-8.......

हकृवि प्रोफेसर डॉ. बिमलेंद्र कुमारी सम्मानित

हिसार/11 मार्च/रिपोर्टर
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वानिकी विभाग में प्रोफेसर डॉ. बिमलेन्द्र कुमारी को लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह अवार्ड वानिकी के क्षेत्र में उनके योगदान और उपलब्धियों के लिए वीनस इंटरनेशनल फाऊंडेशन की ओर से प्रदान किया गया है। यहां उल्लेखनीय है कि उपरोक्त संस्था देश-विदेश की महिलाओं को उनकी विशिष्ट उपलब्धियों के लिए प्रतिवर्ष मार्च माह में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सम्मानित करती है। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य कामकाजी महिलाओं की उपलब्धियों को ढूंढना एवं सेलिब्रेट करना है। इस अवार्ड की चयन प्रक्रिया अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों की समिति व बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट द्वारा निर्धारित विधि के अंतर्गत की जाती है।